१०. नगरीयकरण

बताइए तो

[गाँव के किसान (तात्या) तथा उसके पुत्र (सुरेश) के बीच होने वाले संवाद नीचे दिया है । इसे ध्यानपूर्वक पढ़िए और निम्न प्रश्नों पर चर्चा कीजिए ।]

तात्या : सुरेश, आज मैं खेत देरी से आऊँगा । इसलिए तुम पहले जाओ ।

सुरेश : तात्या, मेरे मन में आज कारखाने में जाने का विचार है ।

तात्या : क्यों रे?

सुरेश : मुझे ऐसा लगता है कि, मैं उस कारखाने में नौकरी करूँ ।

तात्या : कारखानें में नौकरी? क्यों बेटा?

सुरेश : तात्या, कारखाने में नौकरी करने से मुझे प्रतिमाह वेतन मिलेगा । अधिक समय काम किया तो अधिक वेतन मिलेगा । उसी प्रकार दीवाली के समय बोनस (अतिरिक्त वेतन) भी मिलेगा ।

तात्या : अरे! फिर अपनी खेती का क्या होगा?

सुरेश : नौकरी करते-करते खेत का काम भी देखूँगा ।

तात्या : वह सब तो ठीक है, पर क्या यह तुझसे होगा?

सुरेश : तात्या, मैं सब देखूँगा उसकी चिंता मत कीजिए। हम थोड़ा भविष्य का विचार करेंगे । आज हमारा गाँव जैसा दीख रहा है ना उसमें भविष्य में बहुत बड़ा परिवर्तन होने वाला है ।

तात्या : कौन-सा परिवर्तन कह रहे हो तुम?

सुरेश : तात्या; आप थोड़ा भूतकाल में जाईए । पहलेवाला गाँव याद कीजिए । हमारे गाँव कितने छोटे थे और आज हमारे गाँवों की स्थिति देखिए। आज हमारे गाँव के सामने कारखाना आ गया है। हमारी खेती गाँव के पास है । कारखाना शुरू होने से सड़कों का विकास होगा, दवाखाना, विद्यालय, महाविद्यालय, प्रशासकीय कार्यालय जैसी सुविधाएँ शुरू होंगी । गाँव में बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी हो जाएँगी । बाहर से लोग यहाँ रहने आएँगे। गाँव का विस्तार होगा । गाँव का विकास होगा ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

- सुरेश कारखाने में काम करने का विचार क्यों कर रहा है?
- तात्या को किस बात की चिंता हो गई है?
- सुरेश के अनुसार गाँव में कौन-से परिवर्तन होंगे?
- गाँव के संदर्भ में और कौन-कौन-से परिवर्तन होंगे ऐसा आपको क्या लगता है?

भौगोलिक स्पष्टीकरण

आपके ध्यान में आएगा कि सुरेश के गाँव के पास कारखाना शुरू होने से गाँव के लोगों के व्यवसाय में परिवर्तन होने लगा है । जैसे - काम के लिए दूसरे गाँव से अनेक लोग गाँव में रहने लगे । गाँव में विविध सुविधाएँ जैसे-यातायात, होटल, भोजनालय, फुटकर (खुदरा) बिक्री की दुकानें, वैद्यकीय सेवाएँ आदि सभी सुविधाओं के मूल रूप में परिवर्तन होने लगा ।

हमारे देश का विचार करें तो कृषि यह ग्रामीण भाग का प्रमुख व्यवसाय है । कृषि और कृषि के पूरक व्यवसाय गाँव में प्राचीन समय से किए जाते हैं परंतु आजकल विविध उद्योग-व्यवसाय ग्रामीण क्षेत्रों में शुरू हो रहे हैं । जैसे कारखाने, मीलें, ऊर्जा प्रकल्प, बहुउद्देशीय प्रकल्प आदि। इसी कारण स्थानीय तथा आसपास के प्रदेश के लोग इन कार्यों के लिए गाँवों में आने लगे हैं, जिससे गाँव की जनसंख्या में वृद्धि होती है । इन लोगों को विविध सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए अन्य सेवा, व्यवसाय विकसित होते हैं । जैसे - स्वास्थ्य, खानपान, अस्पताल, मनोरंजन आदि । परिणामत: गाँव का विस्तार बढ़ने लगता है और पूरे गाँव का रूप बदलत जाता है ।

गाँवों में सार्वजनिक सेवाओं की पूर्ति करने के लिए ग्राम पंचायत के स्थान पर नगर परिषद अथवा नगरपालिका का उदय होता है । नागरिकों को विविध मूलभूत सार्वजनिक सेवाएँ देने का कार्य इन संस्थाओं को करना पड़ता है। जैसे - पेयजल, सड़कें, यातायात तथा गंदे पानी के निकास की व्यवस्था, सड़कों पर बिजली आदि । इसके अलावा नगरनियोजन, मनोरंजन के साधन, दर्शनीय स्थल,

बाग, आदि सुविधाओं को भी विकसित करना पड़ता है । परिणामत: गाँव का रूपांतरण नगर/शहर में हो जाता है ।

थोड़ा विचार कीजिए

जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए कौन-कौन-सी सुविधाएँ नगरीय भागों में विकसित करना आवश्यक होता है?

भारतीय जनगणना आयोग की ओर से नगरों के संदर्भ में १९६१ में निम्न निष्कर्ष निश्चित किए गए हैं ।

- जिस बस्ती (गाँव) में काम करने वाले ७५% पुरुष कृषि के अलावा अन्य व्यवसाय करते हैं; ऐसी बस्ती को नगरीय बस्ती समझिए ।
- बस्ती की जनसंख्या ५००० से अधिक हों ।
- बस्ती की जनसंख्या का घनत्व दर कम-से-कम ४०० वर्ग किमी इतना होना चाहिए ।

करके देखिए

नीचे दी गई तालिका की सांख्यिकीय जानकारी का उपयोग कर संगणक की सहायता से नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत रेखालेख तैयार कीजिए । इस विषय पर नगरीयकरण के संदर्भ में चर्चा कीजिए । इस आलेख का अध्ययन करके सन १९६१ से २०११ तक के नगरीयकरण का निष्कर्ष, आप अपने शब्दों में लिखिए ।

अ. क्र.	वर्ष	नगरीय जनसंख्या वृद्धि (प्रतिशत)	नगरीय बस्तियों की संख्या
(१)	१९६१	१७.७९	२,२७०
(२)	१९७१	१९.९१	३,५७६
(३)	१९८१	२३.३४	३,२४५
(४)	१९९१	२५.७२	३,६०५
(५)	२००१	२८.०६	५,१६१
(६)	२०११	३७.०७	७,९३५

भौगोलिक स्पष्टीकरण

भारत में नगरीय बस्तियों का विचार करने पर पता चलता है कि सन १९६१ से २०११ तक नगरीय बस्तियों की जनसंख्या में सतत वृद्धि होती गई हैं । सन १९६१ से १९८१ के तक नगरीय जनसंख्या की वृद्धि साधारणत: ५.५५% थी परंतु सन १९८१ से २०११ तक यह वृद्धि १३.७३ प्रतिशत तक पहुँची हुई दिखाई देती है । इसका अर्थ भारत में नगरीय जनसंख्या की तीव्र गति से वृद्धि हो रही है। नगरीयकरण अनेक कारणों से होता है । हम उनमें से कुछ कारणों का यहाँ अध्ययन करेंगे ।

औद्योगिकीकरण :

किसी प्रदेश में उद्योगों का विकास तथा केंद्रीकरण होना, यह नगरीयकरण को सहायता करने वाला घटक है। उद्योग-धंधों की वृद्धि से नौकरी के लिए आसपास के प्रदेशों के लोग इस प्रदेश में आकर्षित होते हैं । इससे नगरीयकरण की प्रक्रिया गतिमान होती है । उन्नीसवीं शताब्दी के दरमिआन में मुंबई शहर में कपडा मीलों के प्रारंभ की वजह से अधिक गति से शहर की वृद्धि हुई । जिस कारण मूल रूप में मछुआरों की बस्तीवाले अनेक गाँव औद्योगिकीकरण और नगरीयकरण से मुंबई महानगर के ही भाग हो गए ।

आकृति १०.१ : औद्योगिकीकरण

देखिए तो भला क्या होता है...

- आपके के परिसर में गाँव का नगरीय बस्ती में रूपांतरण होने का एक उदाहरण बताइए ।
- उस गाँव में नगरीयकरण होने का प्रमुख कारण क्या है, उसे जान लीजिए ।

व्यापार :

किसी प्रदेश में वस्तुओं को लाने ले-जाने, उतारने-चढ़ाने तथा संग्रह करने हेतु अनुकूल परिस्थितियाँ होती हैं, ऐसे स्थानों पर व्यापार तथा उससे संबंधित अन्य सेवाओं की वृद्धि होती है । जैसे- व्यापारिक संकुल, बैंक, सहकारी संस्थाएँ, गोदाम, शीतगृह आदि । इन सेवाओं के

साथ-ही-साथ सड़कें, होटल, निवास आदि घटकों में भी वृद्धि होती हैं । जैसे - भारत में नागपुर शहर देश के केंद्र स्थान में है । यह शहर व्यापार की दृष्टि से सुविधाजनक होने से नगरीयकरण में वृद्धि होने लगी है ।

प्रौद्यौगिकीकरण और तकनीकी :

विविध क्षेत्रों में प्रौद्यौगिकीकरण और तकनीकी के अनेक लाभ दिखाई देते हैं । नगरीयकरण के लिए ये दोनों घटक सहायक होते हैं । पिछले कुछ दशकों में कृषि में आधुनिक तकनीक के उपयोग में वृद्धि हुई है। तकनीकी बढ़ गई है । ग्रामीण भागों में कृषि अब बड़े पैमाने पर यंत्रों की सहायता से की जाने लगी है। इसलिए खेती पद्धति में मनुष्यबल कम हो गया है । जिस कारण कृषि-मजदूर काम-धंधे के लिए शहरों की ओर स्थलांतरित हुआ है । परिणामत: नगरीय जनसंख्या में वृद्धि हो रही गई ।

खोजिए तो

कृषि में आईं हुए प्रौद्योगिकीकरण और तकनीकी में हुए परिवर्तन अंतरजाल की सहायता से खोजिए। आपको प्राप्त जानकारी के आधार पर एक परिच्छेद लिखिए ।

यातायात और संदेशवहन :

जिन बस्तियों या गाँवों में सड़कों, रेल मार्गो आदि यातायात के साधनों का विकास होता है, वहाँ नगरीयकरण तेज गति से होता है । जैसे - कोंकण रेल विकास की वजह से इस मार्ग पर स्थित सावर्डे (जिला-रत्नागिरी) जैसे गाँव का नगरीयकरण होने लगा है । इसी प्रकार महत्त्वपूर्ण रेलमार्ग भुसावल में जुड़ने से भुसावल (जिला जलगाँव) का विकास तीव्र गति से हो गया ।

देखिए तो भला क्या होता है...

पिछले पाँच वर्षो में आपके आसपास प्रमुख यातायात मार्गो पर बस्ती, गाँव, छोटे नगर इनका विस्तार किस प्रकार हो गया, इस विषय पर जानकारी प्राप्त कीजिए ।

स्थानांतरण :

स्थानांतरण यह नगरीयकरण को प्रभावित करने वाला प्रमुख घटक है । यह स्थानांतरण अल्पकालीन, दीर्घकालीन अथवा स्थायी स्वरूप में भी होता है । स्थानांतरण मुख्यत: एक ग्रामीण भाग से, दूसरे ग्रामीण भाग की ओर अथवा ग्रामीण भाग से शहर की ओर होता है । शहरों में उच्च जीवन स्तर तथा रहन-सहन के आकर्षण से भी शहरों की जनसंख्या में वृद्धि होते जा रही है । जैसे : भारत के विविध भागों से पुणे, मुंबई इन स्थानों पर होने वाला स्थानांतरण ।

देखिए तो भला क्या होता है...

- जिले के शहरों की सूची बनाइए ।
- उपरोक्त में से कौन-से घटक उनके विकास में सहायक बने हैं, इस विषय पर चर्चा कीजिए ।
- यदि संभव हो तो अपने आसपास के परिसर या आपके नजदीकी शहरों में स्थानांतरित लोगों से मिलकर उनके स्थानांतरण के कारणों की खोज कीजिए ।

नगरीयकरण के परिणाम : नगरीयकरण से प्रदेश के स्वरूप में बड़े पैमाने पर परिवर्तन होता है । भूमि के नियोजन में विशेषत: यह परिवर्तन दिखाई देता है । जैसे - पहले जिस भूमि पर कृषि की जाती थी वह भूमि निवास तथा कारखानों के रूप में उपयोग में लाई जाने लगी । नगरीयकरण से जिस प्रकार अनेक लाभ होते हैं, उसी प्रकार अनेकानेक हानियाँ भी होती हैं ।

नगरीयकरण के लाभ :

सामाजिक एकता : नगरीयकरण के कारण द्वितीयक, तृतीयक तथा चर्तुथक श्रेणी के व्यवसायों में वृद्धि होती है। जिस कारण आर्थिक व्यवहारों में वृद्धि होती है। इस क्षेत्र का विकास तीव्र गति से होता है । विविध प्रदेशों से आने वाले लोगों के एकत्रित रहने से शहरों में सांस्कृतिक और सामाजिक रूढ़ि-परंपराओं का आदान-प्रदान होता है । इस से सामाजिक एकता निर्माण होती है ।

आधुनिकीकरण : विविध प्रदेशों से लोगों का स्थानांतरण होता रहता है, ऐसे लोगों में ज्ञान, कौशल तथा जानकारी का आदान-प्रदान सुलभता से होता है । नवीनतम सूचना और जानकारी तथा सामग्री इनका लाभ सर्वप्रथम ऐसे प्रदेशों में होता है । उद्योग और व्यवसायों से संबंधित अनेक नए प्रकल्प इन प्रदेशों में विकसित होते दिखाई देते हैं । नगरीय

बस्तियों में नई कल्पनाएँ, नवीनतम जानकारी और तकनीकी सुख-सुविधाओं का लाभ प्रथम मिलता है, परिणामत: यहाँ रहन-सहन का स्तर ऊँचा हो जाता है ।

सुख-सुविधाएँ : नगरीयकरण के कारण नगरीय बस्तियों में अनेक सुख-सुविधाएँ विकसित होती हैं । यातायात, संदेशवहन, शिक्षा, स्वास्थ्य, अग्निशमन आदि सुविधाएँ महत्त्वपूर्ण होती हैं ।

उच्च स्तर की परिवहन सुविधाओं के कारण यात्रा के सुचारूपन में वृद्धि होती है । इसका अच्छा परिणाम वस्तु यातायात, बाजार केंद्र, व्यापार आदि पर पड़ता है ।

शिक्षा की सुविधाएँ भी नगरीय क्षेत्रों में अधिक विकसित हुई पाई दिखाई देती हैं । विशेष रूप से उच्च शिक्षा के लिए अन्य स्थानों से विद्यार्थी नगरीय क्षेत्रों में आते हैं ।

स्वास्थ्य सेवाएँ भी नगरीय भागों में अच्छी तरह विकसित हुई जाती हैं । इन सुविधाओं का लाभ लेने के लिए अन्य क्षेत्रों से अनेक रोगी और उनके रिश्तेदार नगरों में कुछ समयावधि के लिए ठहरने आते हैं ।

नगरीयकरण की समस्याएँ :

झुग्गी-झोपड़ियाँ : नगरीयकरण के कारण शहरों में जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती है । जिस अनुपात में जनसंख्या में वृद्धि होती है उस अनुपात में शहरों में निवास व्यवस्था में वृद्धि नहीं होती । स्थानांतरण करने वाले अधिकांश लोग आर्थिक दृष्टि से कमजोर होते हैं; जिस कारण शहरों के मकान नहीं ले सकते । स्थानांतर करने वाले अनेक लोग प्रतिदिन शहर में आते रहते हैं; परंतु सभी को रोजगार मिले यह भी संभव नहीं होता । जिस कारण अनेक लोगों की आय कम होती है, ऐसे लोग शहर में उपलब्ध खुली जगह पर अस्थायी और कच्चे स्वरूप के मकान बनाते हैं । देखिए- आकृति १०.२ ।

आकृति १०.२ : झुग्गी-झोपड़ियाँ

ये मकान अधिकांशत: अवैध होते हैं । अत: उन्हें स्थानीय स्वराज्य संस्थाओं से सुख-सुविधाएँ नहीं मिलती। यहाँ मकानों का घनत्व अधिक होता है । सड़कें सँकरी होती हैं । आधारभूत सुविधाओं का अभाव होता हैं । ऐसी झुग्गी-झोपड़ियाँ अनिर्बंधता से फैलती जाती हैं। परिणामत: सामाजिक और स्वास्थ्य विषयक समस्याएँ निर्मित हो सकती हैं ।

यातायात-गतिरोध : नगरों का क्षेत्रीय विस्तार होने के कारण नगर के बाह्यकाय तथा उपनगरों में लोग निवास करते हैं । शहर के मध्यवर्ती भागों में व्यवसाय, उद्योग, व्यापार, रोजगार शिक्षा आदि के लिए प्रतिदिन उपनगरों से नगर की ओर आना-जाना करते हैं । सार्वजनिक परिवहन सुविधाएँ जनसंख्या के प्रमाण में पर्याप्त न होने से निजी वाहनों की भीड़ बढ़ती है । परिणामत: यातायात में गतिरोध उत्पन्न होता है और आवागमन में काफी समय नष्ट होता है । देखिए - आकृति १०.३ ।

आकृति १०.३ : यातायात-गतिरोध

थोड़ा सोचिए तो

- आसपास फैले कूड़े-कचरे के ढेर से दुर्गंध तथा बीमारियाँ फैलती हैं ।
- यातायात गतिरोध नियमित देखने मिलता है ।

नगरीयकरण की इस समस्याओं पर आप क्या उपाय सुझाएँगे? इस पर परिच्छेद लिखिए ।

प्रदूषण : शहरों में प्रदूषण एक जटिल समस्या बन गई है। इसका नगरीय जीवन पर विपरित परिणाम होता हुआ दिखाई देता है इसमें वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, जल प्रदूषण दिखाई देता है । नगरों का बढ़ता विकास, सुविधाओं का

अभाव, उसी प्रकार नियमों का उल्लंघन इससे प्रदूषण यह एक गंभीर समस्या होती है । जिस प्रकार नगरों में वृद्धि हो रही है उसी प्रकार प्रदूषण में भी वृद्धि हो रही है ।

अपराध : स्थानांतरित होने वाली जनसंख्या में से अनेक लोगों को रोजगार उपलब्ध नहीं होता; परिणामत: अवैध मार्गों का उपयोग कर अनेकों बार पैसा कमाया जाता है । इससे नगरों में अपराधों में वृद्धि दिखाई देती है । चोरी, सेंध, डकैती, मारपीट, कत्ल आदि अपराध शहरों में बढ़ते जा रहे हैं । इस कारण कानून तथा सुव्यवस्था की गंभीर समस्याएँ निर्माण हो रही हैं । पुलिस तथा न्याय व्यवस्था पर प्रभाव पड़ता हैं ।

उपरोक्त समस्याओं के अतिरिक्त निवास स्थानों की कीमत में अत्यधिक वृद्धि, विभिन्न गुटों में संघर्ष आदि के कारण शहरों में तनाव बढ़ते हैं । परिणामत: शहरों की सामाजिक एकता में बाधा आ सकती है ।

क्या आप जानते हैं?

विकसित नगरों में सूचना और संप्रेषण तकनीक का उपयोग कर अत्याधुनिक बनाने के लिए और शहरों में संपत्ति का व्यवस्थापन अधिक-से- अधिक सुलभ हो इसलिए 'स्मार्ट सिटी' की योजना साकार हुई है । इस योजना का मुख्य उद्देश्य सूचना और (सुदूर संवेदन) संप्रेषण साधनों द्वारा नगरों के विविध घटकों की जानकारी एकत्र कर उसके माध्यम से नगरों का नियोजनपूर्ण विकास करना है । इसका उपयोग शहर की परिवहन एवं संपर्क यंत्रणा अधिक सक्षम करने के लिए सिद्ध होगा । अत्यावश्यक समय पर अथवा आपातकालीन स्थिति में यंत्रणाओं को उचित समय पर प्रतिसाद देना आदि का इसमें समावेश है ।

थोड़ा विचार कीजिए

- नगरों के आसपास के जलस्रोत किस कारण प्रदूषित होते हैं?
- नगरों में प्रदूषित जल का निपटारा किस प्रकार किया जाता है?
- क्या नगरों में होने वाले जल की आपूर्ति स्वास्थ्यवर्धक होती है?
- जल, वायु तथा ध्वनि प्रदूषण के स्वास्थ्य पर कौन-कौन-से विपरीत परिणाम होते हैं?

देखिए तो भला क्या होता है...

- नीचे दिए गए चित्रों का निरीक्षण करके प्रत्येक पर पाँच वाक्य लिखिए ।

वायु प्रदूषण

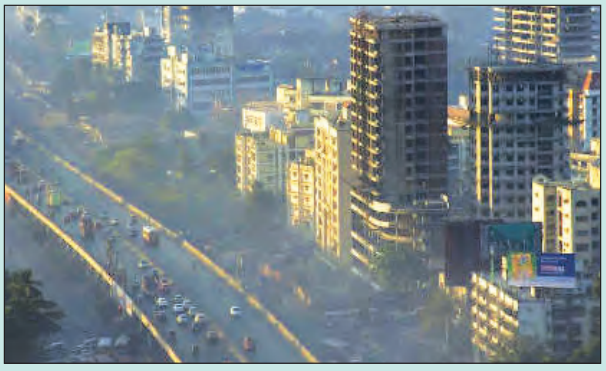

वायु प्रदूषण

जल प्रदूषण

जल प्रदूषण

ध्वनि प्रदूषण

- दिया गया बोध चिह्न किससे संबंधित है?
- इंटरनेट की सहायता से इस विषय की जानकारी प्राप्त कीजिए ।
- आपके दैनिक जीवन में यह योजना किस प्रकार संबंद्ध है, उसे संक्षेप में लिखिए ।

एक कदम स्वच्छता की ओर

स्वाध्याय

प्रश्न १. नीचे दी हुई समस्याओं पर उपाय सुझाइए ।

(अ) नगर में झुग्गी-झोपड़ियों की संख्या बढ़ रही है।

(आ) नगरांतर्गत परिवहन व्यवस्था के गतिरोध होने से यात्रा बहुत-सा समय खर्च हो जाता है ।

(इ) नगरीय बस्तियों में कानून एवं सुव्यवस्था का प्रश्न गंभीर बना हुआ है ।

(ई) नगरीयकरण में प्रदूषण यह गंभीर समस्या निर्माण हुई हैं ।

(उ) नगरीय भागों में स्वास्थ्य की समस्याएँ निर्मित हुई हैं ।

प्रश्न २. उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

समूह 'अ'	समूह 'ब'
(१) तकनीकी विकास एवं प्रौद्योगिकी ।	(अ) नगरीय प्रदेश
(२) मूल निवास छोड़कर दूसरे स्थान पर स्थायी रूप में जाकर रहना ।	(आ) नियोजन का अभाव
(३) ७५% पुरुष कृषि पूरक व्यवसायों में संलग्न हैं ।	(इ) स्थानांतरण
(५) कूड़े की समस्या ।	(ई) नगरीयकरण

प्रश्न ३. महत्त्व बताइए और लाभ लिखिए ।

(अ) प्रौद्योगिकी और तकनीकी

(आ) व्यापार

(इ) औद्योगिकीकरण

(ई) नगरों में सुख-सुविधाएँ

(उ) नगरों में सामाजिक एकता

प्रश्न ४. निम्न घटकों में अंतर स्पष्ट कर उदाहरण लिखिए ।

(अ) यातायात व्यवस्था और यातायात गतिरोध

(आ) औद्योगिकीकरण और वायु प्रदूषण

(इ) स्थानांतरण और झुग्गी-झोपड़ियाँ

(ई) सुख-सुविधाएँ और बढ़ते अपराध

प्रश्न ५. निम्न तालिका पूर्ण करो :

नगरीयकरण की प्रक्रिया	परिणाम
झुग्गी-झोपड़ियों की निर्मिति	अनाधिकृत निवास स्थान अपूर्ण सुख-सुविधाएँ
	उच्च रहन-सहन के आकर्षण के कारण जनसंख्या में वृद्धि । यह अल्पकालीन अथवा स्थायी स्वरूप में होती है ।
प्रदूषण	
	नौकरियों के अवसर निर्मित हुए हैं । सुख-सुविधाओं में वृद्धि
गाँव से नगर में परिवर्तन	

प्रश्न ६. स्पष्ट कीजिए ।

(अ) नगरों की वृद्धि विशिष्ट पद्धति से होते दिखाई देती है ।

(आ) आपकी कल्पना के अनुसार सुनियोजित नगर ।

(इ) औद्योगिकीकरण से नगरों का विकास होता है।

(ई) प्रदूषण एक समस्या ।

(उ) स्वच्छ भारत अभियान ।

प्रश्न ७. निम्न छायाचित्रों के आधार पर नगरीयकरण की समस्याओं के उपाय बताइए ।

उपक्रम :

(१) भारत में बृहत नगर कौन-से हैं? उन्हें भारत के मानचित्र में दिखाकर उनकी सूची बनाइए ।

(२) आपके गाँव से नजदीक किसी महानगर को भेंट दीजिए, वहाँ कौन कौन-सी सुविधाएँ और समस्याएँ दिखाई देती हैं । शिक्षकों की सहायता से वह जानकारी लिखिए।

***

J9I8KH